अंग की पांण्डित्य परम्परा

डॉ0 सुचिता त्रिपाठी

अंग षोडष महाजनपद का सर्वोच्च जनपद के रूप में स्थान संजोया था जिसकी राजधानी चम्पा नगर थी। चम्पा को विभिन्न नामों से पहचान करने की जानकारी साहित्य एवं पुराणों में की गई हैं, इसके भौगोलिक स्वरूप का विस्तार विस्तृत था जिसमें वर्तमान रूप में उड़िसा का कुछ भाग, झारखण्ड, नेपाल की तराई क्षेत्र तक होने की जानकारी पुराणों से प्राप्त होती है।

बिहार के पूर्वी और झारखंड के उत्तरी भाग को मिलाकर यह बड़े भू–भाग में विस्तृत फैला मोरंगा (नेपाल का दक्षिणी भाग) से दुमका–गिरिडीह (झारखंड का उत्तरी भाग) (पूरब में राजमहल की पहाड़ी तथा पश्चिम में लक्खीसराय आदि तक) पौराणिक अंग देश है। षोडष महाजनपद अंग का महत्व एवं समृद्ध राष्ट्र होने की चर्चा भारतीय वांग्मय से प्राप्त होता है। करोड़ों जन मानस वाले इस क्षेत्र की एक अलग भाषा है– अंगिका। अंग जनपद का सबसे पहला साहित्यकार होने का गौरव मंडन मिश्र (महिषी–नवगांव) को जाता है जिन्होंने अनेक संस्कृत वांग्मय की रचना की थी, उसमें एक ग्रंथ 'नैष्यकर्म्यसिद्ध' बहुचर्चित है।